कार्यक्रम रूपरेखा

उद्घाटन सत्र

पूर्वान्ह 11.00 बजे से

मुख्य अतिथि
माननीय शैलेन्द्र जैन
विधायक, सागर विधानसभा

प्रमुख वक्ता/विषय प्रवर्तक
श्री मनोज श्रीवास्तव आई.ए.एस.
सेवानिवृत्त अपर मुख्य सचिव
म.प्र. शासन

अध्यक्षता
डॉ. आनन्द तिवारी
प्राचार्य
शा. स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर

विशिष्ट अतिथिगण

डॉ. बी. के. श्रीवास्तव
प्राध्यापक-इतिहास विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर

डॉ. राजेश श्रीवास्तव
निदेशक
रामायण केन्द्र, भोपाल

भोजनावकाश अपरान्ह 01.45 बजे से 02.00 बजे तक

तकनीकि सत्र

अपरान्ह 02.00 बजे से 04.00 बजे तक

अध्यक्षता
डॉ. सरोज गुप्ता
विभागाध्यक्ष-हिन्दी विभाग
शा. कला एवं वाणिज्य अग्रणी महाविद्यालय, सागर

विषय विशेषज्ञ
डॉ. घनश्याम भारती
विभागाध्यक्ष-हिन्दी विभाग
शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गड़ाकोटा, सागर

समापन सत्र

अपरान्ह 04.00 बजे से 05.00 बजे तक

मुख्य अतिथि
डॉ. संजीव दुबे
प्राचार्य
शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सागर

अध्यक्षता
डॉ. आनन्द तिवारी
प्राचार्य
शा. स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर

विशिष्ट अतिथिगण

डॉ. सुरेश आचार्य
सेवानिवृत प्राध्यापक
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

सलाहकार समिति

डॉ. संजीव दुबे	प्राचार्य, शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर
डॉ. जी.एस. रोहित	प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय मकरोनिया, सागर
डॉ. बी.डी. अहिरवार	प्राचार्य, शासकीय राजीव गाँधी महाविद्यालय, बण्डा
डॉ. चंदा रत्नाकर	प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, बीना
डॉ. रेखा बरेठिया	प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीना

मुख्य संरक्षक/अतिरिक्त संचालक
डॉ. जी.पी. चौधरी
उच्च शिक्षा सागर संभाग (म.प्र.)

संरक्षक/प्राचार्य
डॉ. आनंद तिवारी
शा. स्व. कन्या पी.जी. महाविद्यालय, सागर

संयोजक
डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष

आयोजन सचिव
श्री राजकुमार अहिरवार
सहायक प्राध्यापक

आयोजन समिति

डॉ. रेणुबाला शर्मा	डॉ. अंजना चतुर्वेदी
डॉ. सुनीता सिंह	डॉ. रश्मि दुबे
डॉ. प्रतिमा खरे	डॉ. एस.के. गुप्ता
डॉ. पद्मा आचार्य	डॉ. सरिता जैन
डॉ. एस.एल. साहू	डॉ. संजय खरे
डॉ. ए.एच. अंसारी	डॉ. निशा इंद्रगुरू
डॉ. अरविन्द बोहरे	डॉ. दीपा खटीक
डॉ. सुनीता त्रिपाठी	डॉ. रश्मि माथुर
डॉ. नवीन गिडियन	डॉ. अपर्णा चाचोदिया
डॉ. बिन्दु श्रीवास्तव	डॉ. हरिओम सोनी
डॉ. शक्ति जैन	डॉ. गुलाब देवी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर
9425434543

श्री राजकुमार अहिरवार
9424346942

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति का प्रतीकः रामचरित

(IQAC के तत्त्वावधान में)

06 फरवरी 2024

प्रायोजक - उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. शासन

डॉ. जी.पी. चौधरी
मुख्य संरक्षक/अतिरिक्त संचालक
उच्च शिक्षा सागर संभाग (म.प्र.)

डॉ. आनंद तिवारी
संरक्षक/प्राचार्य
शा. स्वशासी कन्या पी.जी. महाविद्यालय, सागर

डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर
संयोजक

श्री राजकुमार अहिरवार
आयोजन सचिव

आयोजक

हिन्दी विभाग

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

(NAAC द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त)

महाविद्यालय परिचय

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर मध्यप्रदेश बुन्देलखण्ड के बीना, जबलपुर रेल मार्ग पर स्थित सागर संभाग का सबसे बड़ा कन्या महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय में कला, विज्ञान, गृहविज्ञान, एवं वाणिज्य संकाय की स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाएँ एवं अनेक व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित हो रहे है। इस महाविद्यालय की पूर्व छात्रायें विभिन्न शैक्षणिक व्यावसायिक एवं प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हो कर महाविद्यालय का नाम रोशन कर रही हैं।

विषय परिचय

रामकथा की परंपरा में वाल्मीकि की रचना 'रामायण' को प्रथम उपलब्ध साहित्य माना जाता है। जनश्रुति में रामकथा निश्चित ही जनमानस में मौजूद रही होगी। नारद के द्वारा वाल्मीकि के आग्रह पर ''रामकथा'' के वर्णन का सुझाव इसका प्रमाण है। महाभारत के अरण्यकपर्व में यह कथा 'रामोपाख्यान' के रूप में वर्णित की गई है। महाभारत के ही 'द्रोणपर्व' एवं 'शांतिपर्व' में रामकथा के उल्लेख मिलते हैं।

बौद्ध परंपरा में 'दशरथ जातक', 'अनामक जातक' तथा 'दशरथ कथानक' के नाम से जातक कथाएँ उपलब्ध हैं। जैन साहित्य में 'रामचंद्र चरित्र पुराण', 'उत्तर पुराण', 'पद्मपुराण' संस्कृत में, 'पद्मचरिय' प्राकृत और अपभ्रंश में लिखे गए हैं।

संस्कृत, हिन्दी, मराठी, बंगला, तमिल, तेलुगु, उड़िया, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, उर्दु, अरबी, फारसी, आदि भाषाओं में लगभग 400 रामकथाएँ लिखी गई हैं। विदेशों में तिब्बत, तुर्किस्तान, इंडोनेशिया, जावा, सूरीनाम, बर्मा, थाइलैंड आदि देशों में राम काव्य लिखे गए हैं।

राम काव्य परंपरा में तुलसी के 'रामचरित मानस' का अप्रतिम योगदान है। न सिर्फ धार्मिक दृष्टि से वरन् सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक आदि विषयों का यह सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का यह आदर्श प्रतीक है।

रामचरित पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वारा हम राम काव्य के नए आयाम खोजने का प्रयास करेंगे। रामचरित के विभिन्न पात्रों के द्वारा सामाजिक संबंधों, राजनैतिक दायित्वों, पारिवारिक रिश्तों, नैतिक मूल्यों एवं मानवीय सदाचार के जो आदर्श प्रस्तुत किये गए हैं, इनकी प्रासंगिकता पर विचार विमर्श करेंगे। हमें आशा है कि हम सबके सम्मिलित प्रयास से जो 'मानसमंथन' होगा उससे 'राम चरित' का अमृत तो निकलेगा ही, न जानें और कितने रत्नों की भी प्रप्ति होगी।

शोध पत्र निर्देश एवं पंजीयन

संगोष्ठी हेतु शोध पत्र हिन्दी में स्वीकार किये जाएँगे। कम्प्यूटर द्वारा केवल कृतिदेव 010 साइज़ 14 हिन्दी में टाईप कर ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। शोध पत्र मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए। पेपर केवल Word File में प्रेषित करें।

E-mail: hindidepartmentgdc@gmail.com

शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि 30 जनवरी 2024 है। शोध पत्र की अधिकतम शब्द सीमा 2000 शब्द है। आपके द्वारा प्रेषित चयनित शोध पत्र ISBN नंबर के साथ पुस्तिका में प्रकाशित किया जाएगा। बिना पंजीयन शुल्क के शोध पत्र का प्रकाशन नहीं किया जाएगा।

समीक्षा समिति द्वारा चयनित शोध पत्र ही प्रकाशित किये जाएँगे। इस संबंध में समीक्षा समिति का निर्णय ही अंतिम होगा।

पंजीयन शुल्क विवरण

क्र	पंजीयन श्रेणी	पंजीयन शुल्क
1.	प्राध्यापक/सह प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक/ व्याख्याता/शिक्षक	401
2	अतिथि विद्वान/शोधार्थी	201
3	महाविद्यालयीन छात्राएँ	101

पंजीयन शुल्क जमा करने हेतु

नाम : Principal Govt. Autonomous Girls Degree College, Sagar (M.P.)

खाता संख्या : 50100247178903

बैंक का नाम : HDFC Branch Sagar

IFSC Code : HDFC0000449

राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता हेतु आमंत्रण

मान्यवर,

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर में ''भारतीय संस्कृति का प्रतीक: रामचरित'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आप संगोष्ठी में सादर आमंत्रित हैं।

संगोष्ठी के उपशीर्षक

1. आदिकालीन रामकथा के स्त्रोत
2. रामकथा का आदिकाव्य : वाल्मीकि रामायण
3. वाल्मीकि-परवर्ती संस्कृत का रामकाव्य
4. प्रमुख भारतीय भाषाओं में रामकाव्य
5. जैन साहित्य में रामकाव्य
6. बौद्ध साहित्य में रामचरित्र
7. भक्ति कालीन रामकाव्य परंपरा
8. रीतिकालीन रामकाव्य
9. आधुनिक काल का रामकाव्य
10. भारतीय संस्कृति पर रामचरित का प्रभाव
11. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ
12. मानस में रामराज्य की अवधारणा
13. मानस का दार्शनिक पक्ष
14. मानस के पात्रों का आदर्शवाद
15. मानस के पात्रों में जीवन-दर्शन
16. लोकसाहित्य में राम
17. समसामयिक साहित्य में राम
18. रामकाव्य का यथार्थबोध
19. रामकाव्य में नारी-चरित्र
20. राम-साहित्य का ऐतिहासिक पक्ष
21. मुख्य विषय से संबंधित अन्य उपशीर्षक